■ श्री विधि से खेती, मत्स्यपालन, डेयरी, मशरूम व मधुमक्खीपालन सब साथ-साथ

रिंकू देवी ने दी मिश्रित खेती को नयी पहचान

निरंजन

नालंदा जिले के परबलपुर प्रखंड में है मिरजापुर गांव. यहां की महिला किसान रिंकू देवी आज अपने क्षेत्र में काफी चर्चित हो चुकी हैं. कैसे गांव में रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकते हैं और किस तरह महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं, यह कोई रिंकू देवी से सीखे. वह श्री विधि से खेती करने के अलावा मत्स्यपालन, दूध उत्पादन, मशरूम की खेती व मधुमक्खीपालन कर अब पुरुष किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गयी हैं. ऐसा नहीं है कि यह मुकाम हासिल करने में रिंकू देवी को परेशानी नहीं हुई. उन्हें सामाजिक रूढ़ियों व बंदिशों से भी जूझना पड़ा था. आज उनकी कामयाबी पर उनके पति सूर्यदेव सिंह को भी गर्व है. कृषि विभाग रिंकू देवी को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव कोशिश कर रहा है. रिंकू देवी कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकों में भी शामिल हो रही हैं. किसान पाठशाला लगा कर अपने अनुभव दूसरों में बांट रही हैं.

मशरूम उत्पादन के बारे में महिलाओं को बतातीं रिंकू देवी (दाएं).

पट्टे पर खेत लेकर श्री विधि से खेती

महिला किसान रिंकू देवी कृषि विभाग की प्रेरणा से कई वर्षों से श्री विधि से धान व गेहूं की खेती कर रही हैं. इसके लिए वह अपने खेतों के अलावा पट्टे पर खेत लेकर खेती कर रही हैं. इससे इस महिला किसान किसान को प्रगतिशील किसान का दर्जा प्राप्त हुआ. आज भी वह श्री विधि से खेती कर रही हैं.

प्रति वर्ष 30 क्विंटल मछली का उत्पादन

रिंकू देवी का विशेष जोर मत्स्यपालन पर है. फिलहाल वह 25 कट्ठे में तालाब का निर्माण कर उसमें मछलीपालन कर रही हैं. इसके अलावा 49 कट्ठे में और तालाब बनवा कर मत्स्यपालन की योजना है. रिंकू देवी का कहना है अन्य कार्यों से मत्स्यपालन आसान है. खेती में मजदूर की कमी सबसे बड़ी समस्या है. मत्स्यपालन में मजदूर की कोई जरूरत नहीं है. सारे काम वह पति के सहयोग से स्वयं करती हैं. रिंकू देवी बताती हैं कि इसमें नकदी प्राप्त होता है, जिसके कारण आर्थिक समस्याएं दूर होती है. फरवरी में रिंकू देवी ने दरभंगा से 40 हजार पंगास मछली का बीज लाया. अकेली रिंकू देवी प्रति वर्ष 30 क्विंटल मछली का उत्पादन कर रही है.

आत्मा के सहयोग से मधुमक्खीपालन

रिंकू देवी ने मधुमक्खीपालन का व्यवसाय भी शुरू किया है. 'आत्मा' की ओर से उन्हें मधुमक्खीपालन करने के लिए बक्से उपलब्ध कराये गये हैं. तालाब के किनारे इन बक्सों को रख कर वह मधुमक्खीपालन कर रही हैं. इस तरह मतस्यपालन के साथ-साथ मधुमक्खीपालन का उनका यह अनूठा प्रयोग है.

प्रतिदिन 200 किलो दूध संग्रह

रिंकू देवी ने डेयरी के क्षेत्र में भी तेजी से कदम बढ़ा दिया है. महिला दूध उत्पादक सहयोग समिति स्थापित कर वह प्रतिदिन 200 किलो दूध संग्रह कर रही है. जमा किये गये दूध को उनके पति साइकिल पर लाद कर प्रतिदिन तीन किलोमीटर दूर परबलपुर बाजार ले जाते हैं. रिंकू देवी बताती हैं कि दूध संग्रह का कार्य सुबह-शाम का है. बाकी समय में वह मत्स्यपालन, मशरूम उत्पादन वह अन्य व्यवसायों पर देती है.

जाल से मछली निकालती रिंकू देवी.

मधुमक्खीपालन का बॉक्स दिखाती रिंकू देवी.

अपने द्वारा तैयार मशरूम दिखाती रिंकू देवी.

बटन मशरूम का उत्पादन

रिंकू देवी बताती हैं कि शुरुआत में वह ओएस्टर मशरूम का उत्पादन करती थी. इस बार उसने बटन मशरूम का उत्पादन शुरू किया है.

बटन मशरूम की मांग स्थानीय स्तर पर काफी अधिक है. इसको बेचने में कोई परेशानी नहीं है. स्थानीय स्तर पर ही 50 से 60 रुपये किलो बटन मशरूम बिक जा रहा है. इस व्यवसाय को और बढ़ाने पर वह विचार कर रही है.

आगे बढ़ने में कुछ दिक्कतें

रिंकू देवी मिश्रित खेती को नयी पहचान देने में जुटी हुई हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण व सड़क के अभाव में व्यवसाय का विस्तार करने में परेशानी हो रही है.

अधिकारी नहीं कर रहे सहयोग

रिंकू देवी के अनुसार अधिकारियों द्वारा भी उन्हें अपेक्षित सहयोग नहीं दिया जा रहा है. मत्स्यपालन को बढ़ाने के लिए डीएफओ कार्यालय में काफी पहले आवेदन दिया. जब भी विभाग में अपने आवेदन की जानकारी प्राप्त करने जाती हूं, अधिकारी आवेदन को पटना भेजने की बात कह कर लौटा देते हैं. वह बताती हैं कि बरसात से पहले उनका आवेदन स्वीकृत नहीं हुआ, तो तालाब में डाले गये मछली के बीज बरसात का पानी आने से बरबाद हो जायेंगे.

रिंकू देवी का जज्बा देख कृषि विभाग हतप्रभ है. एक साथ श्री विधि, मत्स्यपालन, डेयरी, मशरूम उत्पादन व मधुमक्खीपालन कर रिंकू देवी जिले के अन्य किसानों के लिए प्रेरणा बन गयी हैं. मिश्रित खेती को पहचान दिलाने में रिंकू देवी ने अहम भूमिका निभायी है. ऐसी महिला कृषकों के बलबूते हीं कृषि के क्षेत्र में नालंदा का नाम रोशन हो रहा है.

- सुदामा महतो, जिला कृषि पदाधिकारी, नालंदा

गेहूं मटर सरसी। औ जौ कुरसी।।
(गेहूं और मटर बोआई सरस खेत में तथा जौ की बोआई कुरसौ में करने से पैदावार अच्छी होती है.)